ISSN - 2455-6696

Impact Factor-1.522 (Iijif)

अनुसंधान शताब्दी

अर्ध्दवार्षिक आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका

जनवरी से जुन 2017

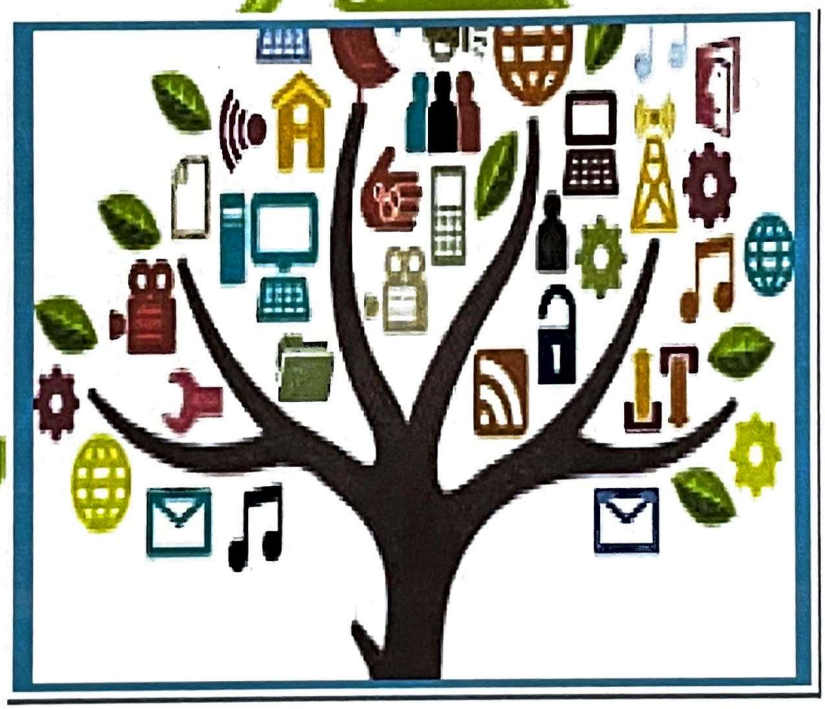

प्रधान संपादक - डॉ.बळीराम राख

संपादक - डॉ.राजश्री तावरे

'अनुसंधान शताब्दी 'आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका

जनवरी से जुन 2017 Issue - III, vol- I

ISSN : 2455-6696

Impact Factor-1.522 (Iijif)

अनुक्रमणिका

1	डॉ.राजश्री तावरे	समकालीन कविता: वैचारिक चुनौतियाँ, नारी मन और मन:स्थिति (यह आकांक्षा समय नहीं के विशेष संदर्भ में)	01-03
2	प्रा.किरण देवी	इक्कीसवीं सदी में प्रेमचन्द की प्रासंगिकता	04-07
3	डॉ.बी.आर.नळे	देवेंद्र मेवाडी की विज्ञान कथा अंतिम प्रवचन	08-12
4	डॉ.बळीराम भुक्तरे	सुनो शेफाली नाटक का तात्विक विवेचन	13-16
5	करपे ए.एस.	मन्नु भंडारी के उपन्यासों में आधुनिकता तलाकशुदा माता-पिता के बच्चों की समस्याएँ (मन्नु भंडारी के उपन्यास: आपका बंटी के विशेष संदर्भ में)	17-20
6	डॉ.ललिता राठोड	साहित्यिक विमर्शों की भूमिका	29-31

'अनुसंधान शताब्दी' आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका
जनवरी से जुन 2017 Issue - III, vol- I
ISSN : 2455-6696
Impact Factor-1.522 (Iijif)

साहित्यिक विमर्शों की भूमिका

डॉ.ललिता राठोड

बीसवीं सदी का अंत और इक्कीसवीं सदी का आरंभ विभिन्न वैचारिक एवं सामाजिक बदलावों का रहा है। बदलाव जीवन्त होने का अर्थ है, परंतु गतिशीलता से बदलावों की मांग करती यह सदी विभिन्न वैचारिक विमर्शों तक सीमित नहीं रह सकी। गतिशीलता इस युग की विशेषता है, और इसका प्रभाव समाज के प्रत्येक स्तरों पर पड रहा हैं, जिसको प्रत्येक भाषा के साहित्य ने दर्ज किया है। यहीं से विमर्शों का नया आरंभ हो जाता है, नया आरंभ इसलिए की, आज तक विचार विमर्श होते रहे हैं, साहित्य में उनको स्थान था परंतु वह कभी सामान्यों, हाशिए के लोगों के लिए नहीं था। जो लगातार पिछले दो दशकों से चल रहा है, स्त्री विमर्श से इसकी शुरुआत तो हो चुकी है परंतु प्रत्येक हाशिए के लोगों का स्वर बनता जा रहा यह विमर्श भी नए बदलावों की मॉग कर रहा है।

Anusandhan Shatabdi

विमर्श दरअसल एक बहस है। रोहिणी अग्रवाल के अनुसार 'जीवन्त बहस' और यह जीवन्त बहस हाशिए के लोगो की, हाशिए के लोगो के लिए है, जो उनके जीवन में प्राण का संचरण करती है। जिंदा होने का अर्थ दे रही है। इन विमर्शों को उपरीतौर पर देखें तो कहीं–कहीं इसमें छिना–झपटी दिखाई देती है, तो कहीं शोषक–शोषित का संघर्ष है। डॉ.कुमारेन्द्र सिंह सेगर इस विषय में चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, "विमर्श के नाम पर आज साहित्य में, समाज में जिस तरह से शिगूफा चलाया जा रहा है, उसमें न तो समाज का भला होने वाला है और न ही साहित्य का। कम से कम इन दोनों विमर्शों के वे महारथी जो ये समझते–मानते हैं कि आपसी वैमनस्यता से आपसी भेदभाव से यदि दोनों तबकों का भला हो जायेगा, उनकी स्थिति सुधर जायेगी तो वे कहीं न कहीं गलत कर रहे हैं। यदि सामाजिक